

DPN 6115

Title : भवानी मानसी पूजन स्तोत्र / Bhavānī mānasī pūjana stotra

Run. No. 6806

Cat. No.

Micro. No.

Subject Stotra

Religion : Hindu / Bauddha

Language (Skt.) / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 26.5 x 8.5

Folios 6

Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

शंकराचार्य

(Saṅkarācārya)

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

इति शंकराचार्यविरचितं भवानी मानसी पूजन स्तोत्रं सम्पूर्णं ॥
इति पंचरत्नस्तुतिः ॥ शुभं ॥

Syāmakṣṇa
(श्याम कृष्ण)

फणीन्द्ररत्न वज्राचार्य
Phanindra Ratna
Vajracārya

गर्भसमयी ॥ निष्पत्ति ॥ १ ॥ सक्षिमा किक निर्मितं सप्तार्कं कनका ॥ सुवर्णं प्रयत्नयुक्तं ॥ कम-
 न्तमत्वा निवृत्त्य नवमूला वसन्तं समर्पयामि ॥ ३ ॥ इवमा सततं जिज्ञासितं विष्णु क्रीतं यावत्सदि-
 क्क सुमाद्यं पञ्चयुग्मसदृशं पदयुग्मपाद्यं सततं नली कुटुमातः ॥ ४ ॥ गन्धपूष्यपवस-
 र्पिण्डस्यैव तिलकुण्डलशतमिश्रं ॥ तस्मात्पातु निर्मितं सुसंनिवृत्तं सततं नली कुटुमातः ॥
 जलजघ्निना कर्णजालि रूलक काललवंगगन्धयुक्तं ॥ ५ ॥ अमृतं निवालि गीतं तद्गवत्या रः
 मर्न विधीयतां ॥ ६ ॥ निमित्तं कनकस्य सर्वतः ॥ पिप्पितं तत्तु धानपत ॥ तदिदं तद्गवतिकं तर्पिः
 तं सधूपकं जेन निपुतिगच्छतां ॥ ७ ॥ अतश्च स्य कर्तुं सप्तमं विविधिः पूष्यं मूर्ध्नी सितं न्यस्तं तत्त-
 पिर तमते ३

मि (ग) मो कि के स्त्रां विकीर्यति लुवन कमनीये ३ पूरयित्वा वसे ३ मिलित विधे विम का दिव्य माः
 क्षिप्युकां ऊन निवन क व सिं द शि क्षी त र्प्या मि ॥ ४२ ॥ मा त ४ का के न द लु म लि त मि दं पू (रु)
 ५ नू विम प्र तं नाना त ल वि (ग) ति स म क ल गी ला क त्र या प्ला य कं । ता स्त मो कि क जालि का प नि व तं पीः
 त्या म दं ध तं कु रं तं प त्रि क ल्या या मि त गि त्व प्रा स र्प नि मि तं ॥ ४३ ॥ ग न दि त्द म नी वि (ग) मे न व (रु)
 म्म क्षि म्का विल स व रु द (रु) ॥ ४४ ॥ उ ग द म्ब वि वि त्वा म ने स्त्रा म द मा न द तं नं व वी ज या मि । रि ॥
 मा ल ६ म ल ल वि ता उ ग द म्ब या यं त क्त्वा म या म क्षि म या म् कु ना र्पि त र्क । पू (रु) वि म नू वि न व
 द नं ह की य म सि न् विला क य विला ल विला व न र्क ॥ ४५ ॥ ०० न्या द या न ति न तं म् कु र पु र्ण

लि ४

नी ना उ य नि स त तं त व पा द पी ० । त स्मा द स त व स म स्त ग नी त म त नी ना उ या मि उ ग द म्ब स
 स दी प ॥ ४६ ॥ प्रिय म् ति न थ रु (ग) स न ल क ल्या न य क्त्वा क न क म य वि र्क ३ स्नि ग ध गं ती नः
 धा घ ३ त ग व ति क लि ता यं वा स ना थ म या तं नू न ग ग त स म नो वा य व ग र्क न ३ ॥ ४७ ॥ ताम
 धू क न व त क्त्वा न्प स सि न्दू न रं ३ क द क क लि त र्क ० ३ किं कि नी (ग) ति कं ० ३ ॥ ग व न यः
 ग ल व के वा म ना म ध ल लो ऊ न नि त व म् द स्ता न्त ल मा ल ३ न ३ ॥ ४८ ॥ ३ दू त त न उ नं
 ज द्वि ना उ मा नं म मि म य व क च उ क्त्वा न य कं । क न क म य म हं वि ता न व नं रु
 व ति त डि न थं स म र्प या मि ॥ ४९ ॥ ह य ग उ न थ प लि (ग) रु मा नं दि मि दि मि इ न्द्रि

म

मवनादयुक्तं अतिवहसुनंगसेन्यमतद्वगवतिरुकिरुप्रवर्तेययामि॥५०॥
 वनिकुतसप्तमागत्रं, वदुसम्यन्तहितंमपाचनं। विपुलंवनमतलादिधंयुवतंदु
 र्गमिदंममर्थितंम॥५१॥ गतपत्रयुतेऽखलावणीतेनतिमीतलयुतेऽपत्रागपीति॥ त्रमनेः
 मुरवतीकृतंननके, वीजनःस्त्रीजगदम्बवीजयामि॥५२॥ मवित्पुलितलातकीतलाली॥
 विगलितमालाविकीर्णुनंगत् मिश्र॥००॥ यमत्रुविनातडीनतकी, तवदयंमृदमातनादिमान
 ॥५३॥ मुरवचनदविलासवल्लुवही, विलसितनिर्जितलालहंगमाला॥ पुत्रजनमुरव
 कातीवातुजाला, तगवतिनंप्रनोनवकिवाला॥५४॥ त्रुवित्रकुवतडीनां, नाद्यकालेन

दीनां प्रतिगसमथलतूप्रत्यसंप्रादनासन्॥ धिमिकितिधिमिधिविद्विद्विद्विद्विद्विद्विधिमि
 तिधिमिगितितलथयिथयीतिगवा॥५५॥ त्रमदलिकूलमालालालधमिल्लाला, सितमः
 रवकालाद्यधिव्यलावंपूना॥ वलितकुसुमसावालायलावह्यपूना॥ अनूपमतवधवाला
 याघानठकी, पुत्रिवतकलहदीदविधेयधूना॥५६॥ त्रमनुतिंतिममर्जनजलुनी, मृदुध
 धां॥ मर्जयगा। मारितिमांकुतिहिरुगदमिक्क, मृदुनयदयंमुरवयंकुत॥५७॥ विपं
 वीधूसफसवान्बादयित्वा, तवदालिगमयकिगन्धर्वकंन्या॥ कहीसावधननविलनमात
 समाकर्णयित्वमयाप्रार्थितामि॥५८॥ अतिवकमनीये, त्रुलीकीनांकदामपितमयित्वाविल

५५३

त्रुलीकी

मवत्तदीयं॥सयमममपिलेन्रयवादिगुगीते॥रगवतिवदीयंमानसंनञ्ज्यामि॥५५॥तवद
विगुहमनूवर्कुनं॥वकुनाननावकुननादयशातदिहिकमूरवपूऊनपू॥सुवर्नकसुवकर्कुमी
५५न॥५०॥पदपदयापतिपूऊकं॥संघा॥मध्यादिरुलंदपातितांसर्वपांपक्षयसं॥
तां॥प्रदक्षिप्तकंपतिन॥कतामि॥५१॥नको॥त्यलालुकलताप्रतायां॥धुआइलखाकू॥
क्षितायां॥अ॥गवन्द्यातकवदितायां॥नमातवानापदपूजायां॥५१॥चत्रधनलिनयुग्मं॥
कं॥५॥पूजायित्वाकनककमलमालीकंद॥गपयित्वागितमिविनिदितायं॥नलपूछां॥
रुदयकमलम॥ध्वदविदधितना॥५३॥अथमहिमं॥मेयेवतिनाम॥धृतिमतिपूछाविना

नताजमानं॥प्रमनूगंदेनधूपंधूपितस्मिन्॥रगवतिवामगदं॥सुतंनिवास॥५४॥अतस्मिन्
तधिनवविहसूवर्कुपी॥५०॥तुलाकात्यवनयोनिभयपायो॥विस्मी॥धृतिमूलनरस्मिन्ममेः
वमान॥पया॥कनकमयनिधीदमान॥५५॥तवदविमनां॥विंश्या॥पदयो॥न॥
द्वताग्या॥अ॥नितकतनेनतको॥पूनरूकां॥नवयामित्रकतां॥५५॥अथमातदूणीनवा
मेतं॥निऊतामूलतसननंजितं॥तवनीयमं॥सिपदृकं॥मूरवगंधु॥छऊलं॥निधीयतां॥५॥
क्षेमथऊगदं॥मं॥वकं॥स्मिन्॥म॥दूतन॥लि॥कया॥वि॥ताजमानं॥अ॥नितद॥मि॥मू॥दा॥णि॥वन॥सा
इ॥मूरव॥गयनं॥कू॥नू॥मां॥द॥वि॥सू॥न॥की॥५५॥मू॥का॥कुं॥द॥दू॥गे॥तां॥म॥हि॥मय॥मू॥कां॥न॥न॥ता

तिरभ्रत॥ तं देतु स्तुतव्यं ज। न निसर्वा लोका रिति शिवे कृपत्रो जायेन शक विदीप
कामात्तान भक्तिं मे ॥३॥ विताभ स्माले योगरत्नम सनं दिक्षु परधरे जगध
री कंठे मुजगाय तिसारी पशुपतिः ॥ कपाली भने सो भजे तिजगादे शक्त य
दवी मम बानी न्वत्या गिगुह्म एापट्टिपादी फल मिदम ॥४॥ परि न्य ह्यं देवा क
ति कति न सेना कुल नया मया प्रवाशी ते रक्षिक मयनी ते पिबुषासि ॥ इषा
नी मया त्रः स्रवज्जन निमातः सकरुणां निरालंको लं बोध रजन कंया मिश
रां ॥५॥ इति पं वरत्न सुतिः ॥ शुभं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥